जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

राग-द्वेष कम करने का सरलतम उपाय अपने सुख-दु:ख के कारण अपने में ही खोजना है, मानना है, जानना है। - बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ - 25

वर्ष : 26, अंक : 2 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

दिल्ली में धर्मप्रभावना

शाहदरा (दिल्ली) : यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर, शिवाजी पार्क में जयपुर से पधारे ब्र. यशपालजी जैन के दिनांक 28 मार्च से 10 अप्रैल 2003 तक प्रात: एवं सायं दोनों समय गुणस्थान विवेचन पर मार्मिक प्रवचन हुए। साथ ही दोपहर में गुणस्थान विवेचन पर हुई तत्त्वचर्चा का लाभ समाज को मिला।

इतने दिनों में मात्र कर्म की दस अवस्थाओं, तीन गुणस्थान तथा श्रावक एवं मुनि के सामान्य स्वरूप पर ही चर्चा हो सकी। आगे के विषय के संबन्ध में पुन: आग्रह पूर्वक आमन्त्रित किया है।

ज्ञातव्य ही है कि यहाँ दिल्ली के उपनगरों के अतिरिक्त बड़ौत एवं कांदला आदि स्थानों से आकर लोगों ने प्रवचनों का लाभ लिया।

इसीसमय समाज के विशेष आग्रह पर अपका एक प्रवचन गुलाब-वाटिका दिगम्बर जैनमंदिर में तथा एक प्रवचन दिगम्बर जैन मंदिर खेकड़ा में भी हुआ।

मंगल तीर्थ यात्रा सानन्द सम्पन्न

जबलपुर (म. प्र.) : अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर यहाँ नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर शाखा द्वारा 18 से 21 मार्च 2003 तक करीब 150 सदस्यों के साथ मंगल तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रथम दिन देवलाली में पण्डित अभयकुमारजी जैनदर्शनाचार्य छिन्दवाड़ा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित विरागजी शास्त्री के व्याख्यान का लाभ सभी को मिला।

द्वितीय दिन सिद्धक्षेत्र गजपंथा पर व्याख्यानों के साथ ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर की अध्यक्षता में 'आगम के अनमोल रत्न' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुमुक्षु भाईयों ने आगम ग्रन्थों के माध्यम से गोष्ठी में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी में सामूहिक वंदना के साथ भक्ति-पूजन पण्डित विरागजी शास्त्री, श्री श्रेणिकजी एवं श्री मनोजजी द्वारा कराई गयी।

शिविर एवं गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

1. बांसवाड़ा (राज.) : अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर ज्ञायक चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा वाग्वर, नौगामा में दिनांक 17 एवं 18 मार्च को दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित पन्नालालजी नानावटी के आचार्यत्व में श्री सम्मेद शिखर विधान एवं श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। साथ ही पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा के परमानन्द स्तोत्र पर मार्मिक प्रवचनों एवं पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री व पण्डित जयन्तीलालजी नौगामा के एक-एक प्रवचन का लाभ उपस्थित समाज को मिला।

इसी समय रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर दो दिवसीय गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसका संचालन श्रीमती ममता जैन ने किया।

कार्यक्रम में बांसवाड़ा, लूणदा, उदयपुर, कुशलगढ़, कलिंजरा, अरथुना, दाहोद एवं नौगामा आदि गांवों से पधारे बहुत से भाई-बहिनों ने भाग लिया।

समस्त कार्यक्रम का संयोजन पण्डित राजकुमारजी जैनदर्शनाचार्य ने किया। कार्यक्रम के समापन पर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महीपाल ज्ञायक ने आभार प्रदर्शन किया।

2. सहारनपुर (उ.प्र.) : फाल्गुन अष्टान्हिका के अवसर पर पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी, रतलाम के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं सायं समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में छहढाला पर कक्षा ली गई। इसी अवसर पर श्री पंचमेरु नन्दीश्वर विधान का आयोजन भी किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित सिद्धार्थकुमारजी के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

पत्र-व्यवहार न करें

मैं सभी गार्हस्थिक तथा सामाजिक कार्यों से निवृत्त होकर कुम्भोज बाहुबली में बारह वर्ष की सल्लेखना तथा समाधिमरण की भावना से आ गया हूँ। अत: कृपया जयपुर व नीमच के पते पर कोई पत्र-व्यवहार न करें।

- डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

28

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

किसी समय उज्जैनी नगरी में श्रीवर्मा नाम का राजा राज्य करता था। उसकी श्रीमती नाम की पटरानी थी। वह श्रीमती वास्तव में श्रीमती अर्थात् उत्तम शोभा सम्पन्न और महा गुणवती थी। राजा श्रीवर्मा के बलि, बृहस्पति, नमुचि और प्रह्लाद ह्न ये चार मंत्री थे। इन चारों में जैन साधुओं के प्रति इकतरफा द्वेष की भावना थी।

किसी समय जिनश्रुत के पारगामी महामुनि अकम्पन अपने सातसौ मुनि शिष्यों के साथ उज्जैनी के बाह्य उपवन में पहुँच कर विराजमान हुए ही थे कि समस्त नगर में पानी में तेल की भांति मुनिसंघ आने की खबर फैल गई। उन मुनिराजों के संघ की वन्दना के लिए नगरवासी सागर की तरह उमड़ पड़े। महल पर खड़े राजा ने नगरवासियों की भारी भीड़ को उपवन की ओर जाता देख मंत्रियों से पूछा कि ये लोग असमय में कहाँ जा रहे हैं ? चारों मंत्रियों में मुनियों के प्रति ईर्ष्याभावना तो थी ही; अत: तीन तो चुप ही रहे बलि मंत्री ने उत्तर दिया कि ये लोग अज्ञानी जैन मुनियों की वन्दना को जा रहे हैं। उमड़ती भीड़ को जाता देख राजा श्रीवर्मा ने भी वहाँ जाने की इच्छा प्रगट की। मंत्रियों ने राजा को प्रथम तो वहाँ जाने से रोकने का प्रयास किया; परन्तु राजा ने उनकी बात नहीं मानी; क्योंकि वे मुनियों के प्रति मंत्रियों की अरुचिभावना को पहचानते थे। जब राजा स्वयं वन्दनार्थ वहाँ गये तो चारों मंत्री भी विवश होकर राजा के साथ गये और मुनियों से विवाद करने लगे। अकम्पनाचार्य को पहले ही ऐसा कुछ आभास हो गया था कि यहाँ कुछ गड़बड़ हो सकती है। संघ पर उपसर्ग भी आ सकता है। अतः उन्होंने सबको मौन रहने का आदेश दे रखा था; परन्तु उस समय श्रुत सागर मुनिराज वहाँ नहीं थे, आहारचर्या पर गये थे, इस कारण उन्हें गुरु के आदेश का पता नहीं था। उस समय शेष समस्त मुनिसंघ गुरु अकम्पनाचार्य की आज्ञा से मौन बैठे थे, इसकारण उससमय तो चारों मंत्री विवश होकर लौट आये। लौटकर आते समय उन्होंने रास्ते में एक मुनि श्रुतसागर को देखकर राजा के समक्ष छेड़ दिया; क्योंकि वे किसी भी तरह राजा को उनके विरुद्ध भड़काना चाहते थे। श्रुतसागर मुनि अपने नाम को सार्थक करनेवाले सचमुच श्रुत के सागर थे, जिनवाणी के मर्मज्ञ थे; अतः उन्होंने चारों मंत्रियों को निरुत्तर कर दिया। यहाँ तक तो कोई झंझट नहीं हुई; किन्तु श्रुतसागर ने उनके पूर्वभवों की चर्चा करके उन्हें भड़का भी दिया।

मुनि श्रुतसागर ने इस घटना को गुरु अकम्पनाचार्य को सुनाकर अपने अपराध का प्रायश्चित करने के लिए गुरु से निवेदन किया। आचार्य अकंपन ने बहुत दूरदर्शिता से विचार कर उन्हें प्रायश्चित्त स्वरूप उसी वाद-विवाद के स्थान पर प्रतिमा योग से ध्यानस्थ रहने का आदेश दिया। तदनुसार मुनि श्रुतसागर वहाँ पहुँच कर ध्यानस्थ हो गये। बदले की भावना से वे चारों मंत्री उन्हें मारने गये; परन्तु जिनभक्त किसी देव द्वारा उन्हें वहीं कीलित कर दिया गया, बन्धनबद्ध कर दिया गया, यह घटना जब राजा को ज्ञात हुई तो राजा ने चारों मंत्रियों को न केवल नौकरी से, बल्कि देश से ही निकाल दिया।

उस समय हस्तिनापुर में महापद्म नामक चक्रवर्ती था। उसकी आठ कन्यायें थीं और आठ विद्याधर उन्हें हरकर ले गये थे। शुद्धशील की धारक वे कन्यायें जब वापिस लायीं गईं तो उन्होंने संसार से विरक्त होकर दीक्षा धारण कर ली। वे आठ विद्याधर भी संसार को असार जानकर तप करने लगे। इस घटना से प्रभावित होकर चरम शरीरी महापद्म चक्रवर्ती भी संसार से विरक्त हो गये। अपने बड़े पुत्र पद्म को राज्य देकर छोटे पुत्र विष्णुकुमार के साथ दीक्षा धारण कर ली।

रत्नत्रय की उत्कृष्ट साधना के साथ उग्र तपश्चरण करने से वे अनेक ऋद्धियों के धारक हो गये। देशकाल की परिस्थितियों से सुपरिचित वे चारों मंत्री उज्जैनी से निकाले जाने के बाद हस्तिनापुर में बलि आदि नये राज्य पर आरूढ़ राजा पद्म की सेवा करने लगे। उस समय राजा पद्म बली मंत्री के सहयोग एवं मार्गदर्शन से किले में स्थित सिंहबल राजा को पकड़ने में सफल हो गया। इसलिए राजा पद्म ने बलि से इच्छित वर माँगने का वचन दे दिया। बलि बहुत चतुर और राजनीतिज्ञ खिलाड़ी मंत्री था; अतः उसने उस 'वचन' को धरोहर के रूप में राजा के पास ही रख दिया।

उज्जैनी से विहार करते हुए जब अकम्पनाचार्य का वही संघ हस्तिनापुर आया और चार माह के वर्षायोग में नगर के बाहर विराजमान हो गया तो बलि आदि मंत्री सशंक हो भयभीत हो गये और उन्हें वहाँ से हटाने का उपाय सोचने लगे। एतदर्थ बली मंत्री ने राजा पद्म के पास जाकर अपनी धरी हुई 'वचन' रूप धरोहर के बदले में सात दिन का राज्य शासन मांग लिया। राजा पद्म मांगे 'वरदान' को देकर ७ दिन को अज्ञातवास में चले गये।

राज्याधिकार पाकर उन बलि आदि चारों मंत्रियों ने 'अकम्पनाचार्य आदि' पर भारी उपद्रव कराया। उसने चारों ओर से मुनियों को घेरकर तीखे पत्तों का घनीभूत धुँआ करवाया तथा चारों ओर जवारे (दूब) उगाने के लिए जौ आदि अनाज उगाया। इसकारण समस्त मुनि संघ ने यह संकल्प कर अवधि सहित सन्यास धारण कर लिया कि ''जब उपसर्ग दूर हो जायेगा, तभी आहार-विहार करेंगे'', उस समय मुनिराज विष्णुकुमार के गुरु मिथला नगरी में थे। दैवयोग से उनके अवधिज्ञान में हस्तिनापुर में हुए अकम्पनाचार्य के संघ पर भयंकर उपसर्ग की सारी घटना आ गई। और उनके मुँह से निकल पड़ा कि ह्न ''आज अकंपनाचार्य के संघ पर दारुण उपसर्ग हो रहा है।'' पास में बैठे क्षुल्लक पुष्पदन्त ने वह बात सुनी तो उन्होंने पूछा ह्न गुरुदेव! इस उपसर्ग के निवारण का क्या उपाय है? आप मुझे बतायें और मेरा मार्गदर्शन करें कि मैं इस काम में क्या योगदान कर सकता हूँ? **(क्रमश:)**

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

11

जिसप्रकार जल और अग्नि की शीत-उष्ण पर्याय है, वह पुद्गल की है, पुद्गल से अभिन्न है और उसका अनुभव - ज्ञान आत्मा की पर्याय है; उसीप्रकार राग-द्वेष, सुख-दुःख के परिणाम होते हैं, वह पुद्गल की पर्याय है, पुद्गल से अभिन्न है और उसका अनुभव - ज्ञान वह आत्मा की पर्याय है। जिसप्रकार शीत-उष्ण दशारूप आत्मा का परिणमित होना अशक्य है; उसीप्रकार राग-द्वेष, सुख-दुःखरूप परिणमना भी अशक्य है। जिसने शुभ-अशुभ की कामना से भिन्न ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा का अनुभव किया है, उस ज्ञानी का शुभाशुभरूप होना अशक्य है। भले ही अपूर्ण दशा में राग-द्वेष होगा; किन्तु ज्ञानी उसके ज्ञाता ही रहते हैं। अहाहा ! यहाँ रागादि परिणामों को आत्मा से भिन्न पुद्गल-परिणाम कहते हैं और जगत उस शुभराग से धर्म होना मानता है। वीतराग सर्वज्ञ द्वारा कथित तत्त्व जगत को कठिन लगे ऐसा है। वीतराग की वाणी भाग्यशालियों को ही मिलती है। अरबों रूपयों से भाग्यशाली नहीं होता; बल्कि वीतराग की वाणी सुनने वालों को भाग्यशाली कहा जाता है।

भाई ! संत कहते हैं कि पर्याय को देखनेवाली अपनी आँख को सर्वथा बंद कर दे ! देव-गुरु पंचपरमेष्ठी आदि को देखना बन्द कर दे; किन्तु भाई अपने द्रव्य को देखनेवाली आँख खोलकर देख ! भाई यह तो प्रवचनसार अर्थात् संतो का हृदय कलेजा है। वे संत ऐसा कहते हैं कि नरकादि पर्याय को देखने की आँख तो बन्द कर दे; परन्तु सिद्ध पर्याय को भी देखना छोड़ दे तो तेरे द्रव्य भगवान को देखने के चक्षु खुल जायेगें। एक बार देख तो सही ! प्रभु तू कौन है ? जहाँ पर्याय को देखने की आँख बन्द की, वहाँ द्रव्य को देखने की आँख खुल गई, उसका ज्ञान विकसित हो गया। अब वह भगवान छिपा नहीं रह सकेगा।

प्रत्येक पर्याय सत् है, स्वतंत्र है, उसे पर की अपेक्षा नहीं है। राग का कर्ता आत्मा तो नहीं है; किन्तु राग का ज्ञान कहना, वह भी व्यवहार है और ज्ञान परिणाम को आत्मा करता है - ऐसा कहना वह भी व्यवहार है। वास्तव में तो उस काल की पर्याय षट्कारक से स्वतंत्र हुई है।

वास्तव में तो मैं स्वयं ही हूँ और अन्य वस्तु है ही नहीं। केवली हों, सिद्ध हों, वे उनके हिसाब से भले हों; परन्तु मेरे हिसाब से नहीं हैं - इसप्रकार स्वभाव की अपेक्षा से राग भी अपना नहीं है। तो फिर देह-धन-स्त्री-पुत्रादि मेरे कैसे हो सकते हैं ? ज्ञानस्वरूप अकेला मैं ही हूँ - ऐसा जोर आना चाहिए।

प्रश्न : मैं ज्ञाता हूँ - ऐसा जोर क्यों नहीं आता ?

उत्तर : जोर स्वयं नहीं लगाता; इसलिये नहीं आता। सांसारिक बाह्य-प्रसंगों में कितनी रुचि और उत्साह आता है ! वैसे ही अंतर में अपने स्वभाव की रुचि और उत्साह आना चाहिए।

जैसे सर्वज्ञ को लोकालोक ज्ञेय हैं, लोकालोक को सर्वज्ञ जानते हैं, वैसे ही जिस सम्यग्दृष्टि ने सर्वज्ञस्वभावी आत्मा को दृष्टि में लिया है, वह सर्वज्ञ की भाँति राग को जानता ही है ; किन्तु राग का कर्ता नहीं है - ऐसी ही वस्तुस्थिति है। यह बात तीनकाल-तीनलोक में बदले ऐसी नहीं है। यदि अन्य रीति से बैठाने जाए तो किसी प्रकार वस्तु सिद्ध नहीं हो सकेगी। यह तो भीतर से आयी हुई वस्तुस्थिति है। शास्त्र भले ही अनेक प्रकार से कहें; परन्तु वस्तु ऐसी ही है।

स्वभाव से ही मैं ज्ञायक होने के कारण सम्पूर्ण विश्व के साथ मुझे ज्ञेय-ज्ञायक लक्षण संबन्ध है ; किन्तु यह ज्ञेय इष्ट-अनिष्ट है, ज्ञेय के कारण ज्ञान होता है अथवा यह ज्ञेय मेरा और मैं इसका स्वामी - ऐसा किसी भी प्रकार का संबन्ध नहीं है। ज्ञायक का सर्व ज्ञेयों को जानने का स्वभाव होने से मानों लोकालोक ज्ञायक में उत्कीर्ण हो गये हों - इसप्रकार एक क्षण में जान लेता है। ऐसे ज्ञेय-ज्ञायक लक्षण संबन्ध के कारण एकसाथ अनंत ज्ञेयों को अनन्तरूप से भी ज्ञायक तो सदा ज्ञायकरूप ही - एकरूप ही रहा है। अनादि से ज्ञायक तो ज्ञायकभाव से ही रहा है; किन्तु मिथ्यात्व के कारण अन्यथा मानने में आ रहा है; इसलिये उस मिथ्यात्व का मूल से उखाड़कर स्वभाव से ही ज्ञायक - ऐसे आत्मतत्त्व के ज्ञानपूर्वक शुद्धात्मा में प्रवर्तन के सिवा अन्य कुछ करने योग्य नहीं है।

प्राप्य, विकार्य और निर्वर्त्य ऐसा व्याप्य लक्षणवाला पुद्गलद्रव्य के परिणामस्वरूप कर्म अर्थात् भक्ति, पूजा, दया, दानादि के शुभ परिणाम उसके आदि-मध्य-अन्त में पुद्गलद्रव्य स्वयं अन्तर्व्यापक होकर परिणता है, ग्रहण करता है तथा उपजता है। अहाहा ! रागादि परिणाम में पुद्गलद्रव्य स्वयं अन्तर्व्यापक होकर रागरूप परिणमित होता है, राग को ग्रहण करता है, रागरूप उत्पन्न होता है। जीव उस राग के आदि-मध्य-अन्त में व्यापक होकर परिणमित नहीं होता, ग्रहण नहीं करता अथवा रागरूप उत्पन्न नहीं होता; क्योंकि जीव तो मात्र ज्ञायकभावस्वरूप है, वह ज्ञायकभाव दया, दान, भक्ति आदि रागरूप ऐसे पुद्गल कर्म को क्यों करेगा ? पुद्गलद्रव्य स्वयं भक्ति, विनय, वैयावृत्य आदि भाव के आदि-मध्य-अन्त में व्यापक होकर राग को उत्पन्न करता है। अहाहा ! तीनलोक का नाथ चैतन्यस्वभाव वह रागादि परिणामों को नहीं करता। ज्ञायक प्रभु उन रागादि परिणामों में व्याप्त नहीं होता। चारित्रमोह की अशक्ति से भी जीव रागादिभावों को नहीं करता - इसप्रकार यहाँ केवल द्रव्यस्वभाव को ही सिद्ध करना है।

अरे प्रभु ! कहाँ तेरी महानता और कहाँ विभाव की तुच्छता ? ऐसे तुच्छ विभावभाव तुझसे कैसे हो सकते हैं ? तू तो ज्ञातास्वभावी है। तुझसे विकारभाव कैसे होता है ? अहाहा ! द्रव्यदृष्टि के समयसार के कथन अलौकिक हैं।

रागादि मुझमें हैं ही नहीं, विकल्पों को मैं ला भी नहीं सकता, छोड़ भी नहीं सकता - ऐसा अन्तर से निर्णय करना चाहिए। यों ही ऊपर-ऊपर से नहीं चलेगा।

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

हमारे यहाँ उपलब्ध नये प्रकाशन

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के साहित्य बिक्री विभाग में निम्न नये प्रकाशन बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन (गुज.)	12/-
णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन	10/-
मोक्षमार्गप्रकाशक प्रवचन, भाग-4	40/-
बोधि समाधि निधान (कथा संग्रह)	10/-
अपराध क्षण भर का (कॉमिक्स)	10/-
जिनेन्द्र पूजेचे स्वरूप (मराठी)	03/-
अष्टपाहुड प्रवचन भाग-1	25/-
कर लो जिनवर की पूजन	35/-
जिनेन्द्र अष्टक (मराठी)	20/-
सत्य की खोज (अंग्रेजी)	25/-
अनुभवप्रकाश प्रवचन	25/-
नियमसार पद्यानुवाद	10/-
वैराग्य वर्षा	05/-

शिखर शिलान्यास सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : दशवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ के गर्भकल्याणक दिवस पर निर्माणाधीन भगवान महावीर जिनमंदिर परकोटा सागर में श्रीमती धोकाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री सुंदरलालजी परिवार एवं श्री गुलझारीलालजी मकरोनिया द्वारा शिखर शिलान्यास की विधि 25 मार्च 2003 को संपन्न की गई।

विधि-विधान का कार्य पण्डित अरुणकुमारजी मकरोनिया एवं ब्र. नन्हेभाई द्वारा संपन्न कराया गया।

वैराग्य समाचार

श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल, भोपाल के अध्यक्ष श्री रतनलालजी सोगाणी की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला सोगाणी का 14 फरवरी 03 को शान्तीपूर्वक देहावसान हो गया है। आप धर्मपरायणा महिला थीं।

सोगाणी निवास पर पण्डित विमलचंदजी झांझरी, बा. ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' व पण्डित राजमलजी भोपाल के प्रवचन एवं वैराग्य-भावना पर पाठ हुआ।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 50/- रुपये प्राप्त हुये हैं। एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही कामना है।

तत्त्वगोष्ठी का आयोजन

रायपुर (छ.ग.): यहाँ 23 मार्च 03 को तत्त्वगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री पन्नालालजी खैरागढ़ के प्रवचन हुये। साथ ही श्रीमती मानवती जैन के सौजन्य से आयोजित आगमज्ञान प्रतियोगिता के पुरस्कार श्री सनत जैन पुलिस लाईन ने वितरित किये। **- समकित सिंघई**

हे महावीर भगवान ....

महावीर के सिद्धान्तों पर, चलकर हम बतलायेंगे।
महावीर के पथ पर चलकर, महावीर बन जायेंगे।।
हम महावीर के भक्त हैं, हम उनकी वाणी सुनायेंगे।
जो भी सुनकर अमल करेंगे, महावीर बन जायेंगे।।
महावीर के आदर्शों को जो जीवन में लावेगा।
अपने में ही रम के वह जिय मुक्तिरमा को पावेगा ।।
महावीर के उपदेशों को, जिसने भी अपनाया है।
स्वयं हो गया महावीर वह, जिसने उनको ध्याया है ।।
महावीर के संदेशों को हम जग को बतलायेंगे।
जिसको सुनकर भव्य जीव तो मोक्ष निकेतन पायेंगे।।
जीओ और जीने दो सबको, महावीर का यह संदेश।
अहिंसा परमधर्म है यह सब भगवन्तों का है संदेश ।।
अपने को अपना करके जब, महावीर ने ध्यान किया।
आतम को स्व मान के उनने, मोह शत्रु का नाश किया।।
मोह शत्रु का नाश हुआ तब, प्रगटा उनको केवलज्ञान।
तब अपने में लीन हो गये, दिया न प्रभु ने पर पर ध्यान।।
खिरने लगी जब धर्मसभा में, महावीर अमृतधारा।
सुनकर के सब भव्य जनों ने, त्याग दिया वैभव सारा ।।
महावीर ने जब अन्तिम चारों कर्मों का नाश किया।
तब उनने अविचल अनुपम,सिद्धदशा को प्राप्त किया।।

- राजेश जैन, सिंगोली

कुछ ऐसा अद्भुत हो जाये सब वस्तु-व्यवस्था को समझें।
है तभी महोत्सव सार्थक जब निज में रम पर में न उलझें।।
प्रभु तुमने जो उपदेश दिए, उनको जीवन में अपनाएँ ।
हम चलें सतत् शिवपथ पर स्वामी शाश्वत शिव सुख पा जाएँ।।

- जितेन्द्र सिंह शास्त्री

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **अप्रैल (द्वितीय) 2003**
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127